

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

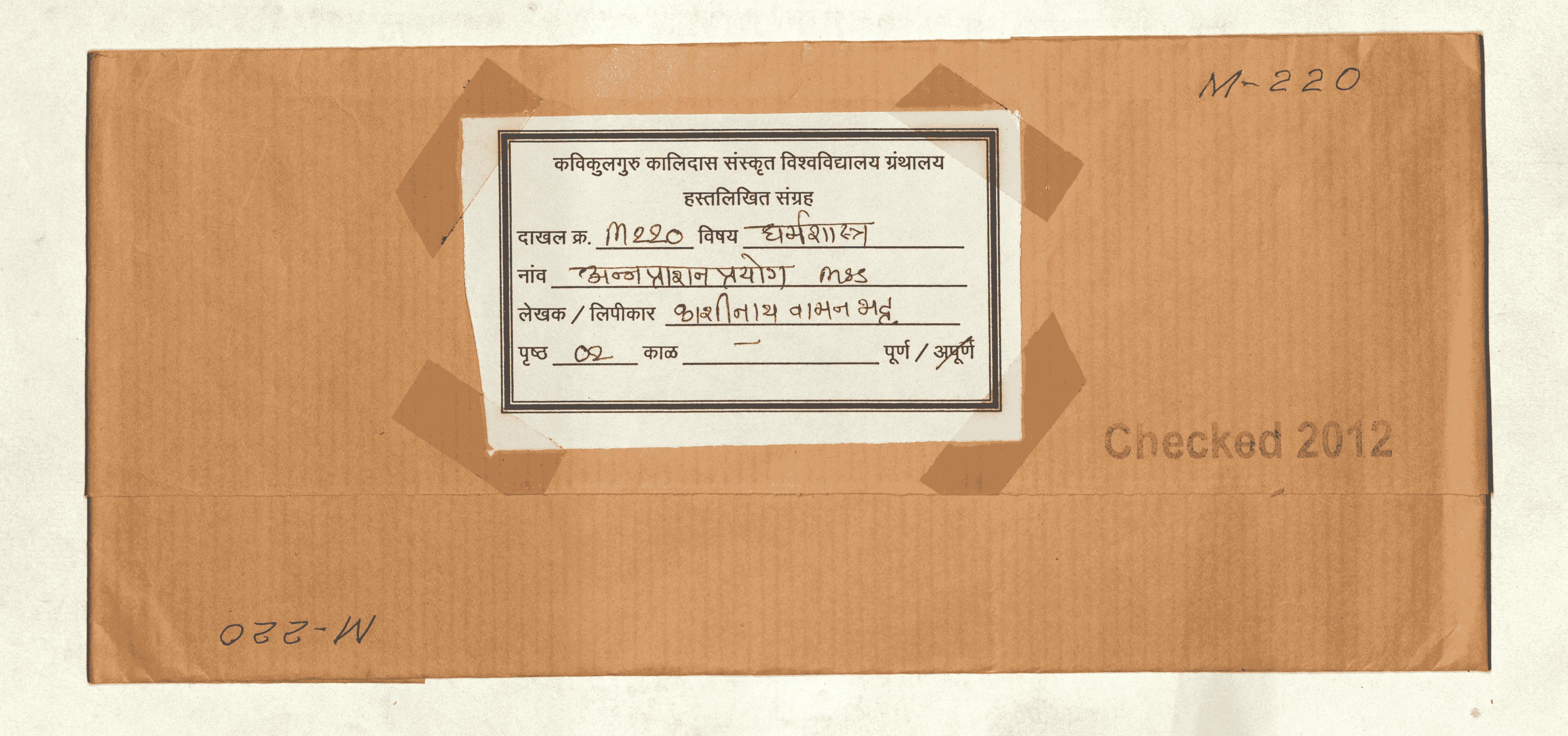
https://www.namami.gov.in/

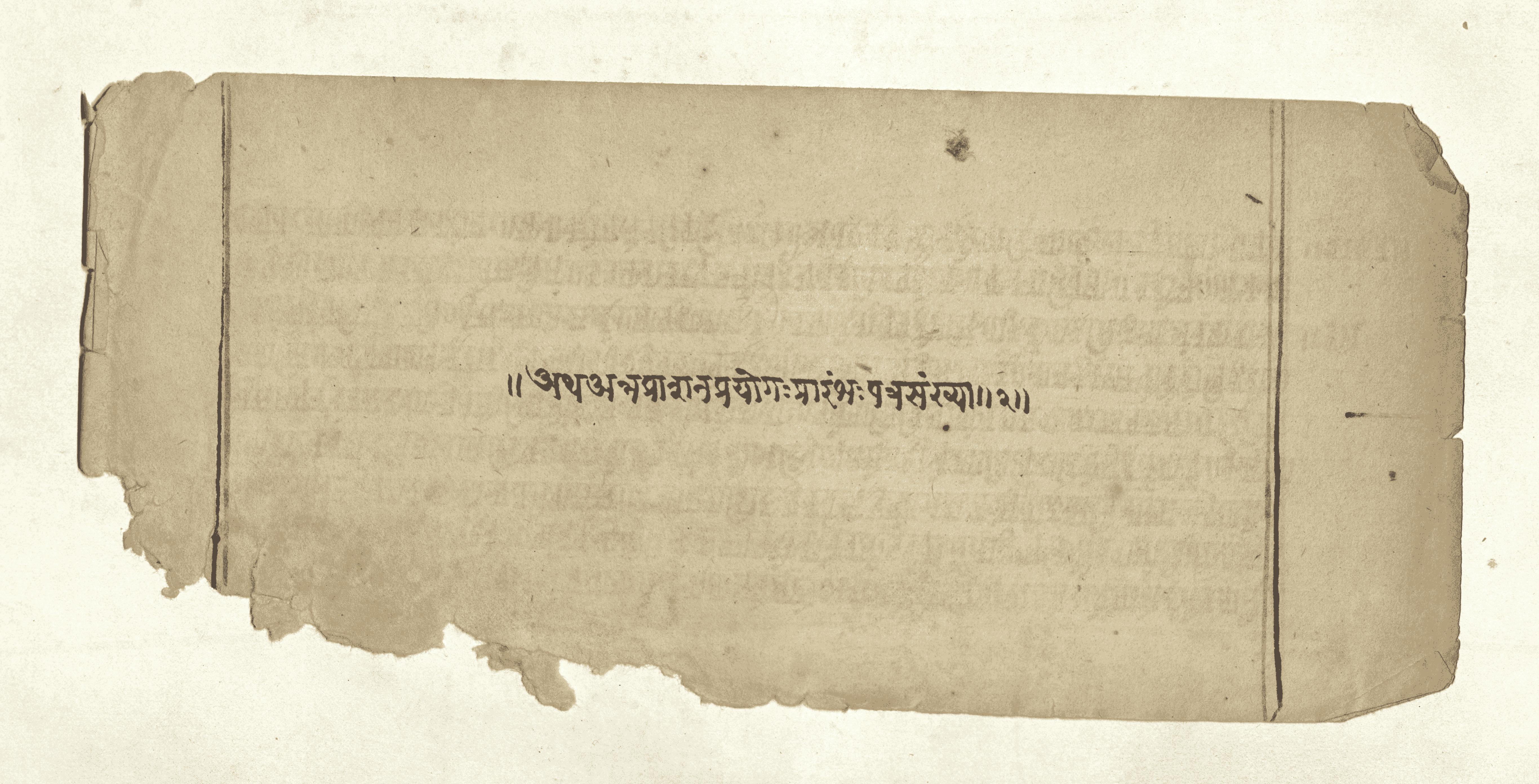
Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/





CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तम्। त्राणशाचनमः॥व्यथान्यवान्य योगः॥ज स्तःष्षेमासे असंभवेश्यष्टमाय् यत्मे समे नासरं तेषुतातेषु स्विश्वित्तं स्व स्विश्वेत्तं स्वार्ध्वः कृष्येश्वात्वः स्वाति से रू व्यपक्षेणान्य मिष्कि जित्त्याम् विशेषे स्वात्त्य स्विशेषा स्वात्त्र स्विशेषा स्वात्त्र स्विशेषा स्वात्त्र स्वात्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्त्र स्वात्र स्वात्त्र स्वात्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्त्र स्वात्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त् स्वात्त्र स्वात्त्

नहोमरित।शिक्षनां व्यवहारायभ्य। कर्तारुतमां गिल्यः माञ्जुरव्यपित्यसंवृत्सरसिह्तां स्वापी वोपित्यहें राम्राती संदीर्शमास्यिशो मान्यशिक्षामां राम्रे में क्षिण तदं गं के जेपितपूजनं पु क्या ह्या व्याप्त में मार्म हिन्दा हुन नं नो दीश्रा श्रीपर मेश्वरपीत्य पें अन्न पादानार व्याप्त में करि वो ।। तदं गं के जेपितपूजनं पु क्या ह्या वन ने मार्म हिन्दा हुन नं नो दीश्रा देव रिष्ये। इति संद ल्या क्ष्या स्वाप्त मित्र प्रमादा पृथ्य हुन हिन्दा हिन्दा या माने संद्र्या निवास हिन्दा हिन्दा कि विवास सित्र प्रमादा विवास सित्र प्रमादा प्रमादा प्रभाव हिन्दा ्रभूज्यामिशिवाक्तआपओष्ययः खनगीयात्तआपओष्ययोश्वयं विति।। ततीयथेष्टंगवािय्वा । सुखे । अर्ज्यापावाव्या । सुखे । स्वाप्त्र । सुक्षेत्र । स्वाप्त्र । स्वाप्त्र

```
[OrderDescription]
,CREATED=16.09.19 12:47
,TRANSFERRED=2019/09/16 at 12:48:31
,PAGES=4
,TYPE=STD
,NAME=S0001822
,Book Name=M-220-ANANPRASHAN PRAYOG
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
```